P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-2* May (Part-1)- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

वर्तमान युग में अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में गीता दर्शन की प्रासंगिकता

Relevance of Geeta Philosophy in Techer Education in Present Context

कृश्ण चन्द गौड़
अध्यक्ष,
ि"ाक्षा संकाय,
डी0पी0बी0एस0 (पी0जी0)
कालेज, अनूप"ाहर, बुलन्द"ाहर
(उ.प्र), भारत

सारांश

आधुनिक युग में गीता का ज्ञान व्यक्तियों को कर्म करने की प्रेरणा देता है। किसी भी व्यक्ति के समक्ष जीवन किसी समस्या के आने से हम गीता–द"ार्न से प्रेरणा ले सकते हैं।

गीता के अनुसार ि"ाक्षा का अर्थ जन्म–जन्मान्तर चलने वाली प्रक्रिया है। 'न हि ज्ञानेन सदृ"ां पवित्रमिह विद्यते' गीता में ज्ञान उल्लेख दो रूपों में किया गया है– सांसारिक एवं आध्यात्मिक।

गीता के अनुसार वि"व की प्रकृति दो प्रकार की है–

1. परा प्रकृति
2. अपरा प्रकृति

गीता के दा"ार्निक सिद्धान्त के व्यवहारिक पक्ष में कर्म योग की उपासना की गई है, जोकि हमें गीता के केन्द्र बिन्दु पर अवस्थित करता है। दे"ा–काल परिस्थिति में यह मनुष्यों के लिए आद"ार् वाक्य है– ''कर्मण्ये वाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन'' अर्थात् 'कर्म करते जाओ और फल की इच्छा मत करों' निष्काम की परणा का उद्दे"य गीता–द"ार्न से ही सम्प्राप्त है। गीता द"ार्न की ि"ाक्षण विधियों में ज्ञानयोग, कर्मयोग तथा भक्तियोग का सुन्दर मिश्रित समन्वय है। तर्क विधि से ि"ाक्षण करते हुए श्रीकृष्ण अर्जुन को सन्तुष्ट करते हैं। गुरू तथा ि"ाष्य के सम्बन्ध को गीता–द"ार्न में आद"ार् रूप में द"ार्ाया गया है। ि"ाष्य अर्जुन द्वारा किये गये प्र"न–प्रति प्र"न का उत्तर गुरू श्रीकृष्ण क्रमवार देते जाते हैं। गीता में एक ऐसे ि"ाष्य को द"ार्ाया गया है जो सीखने का इच्छुक है तथा अपने गुरू के प्रति श्रद्धावान है।

अन्त में हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि गीता में दिया हुआ ज्ञान बहुत उपयोगी है। अर्जुन की तरह किंकर्त्तव्यविमूढ़ होने वाले व्यक्ति के लिए उपयोगी है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि गीता में सत्यं,ि"ावं, सुन्दरं जैसे आध्यात्मिक मूल्यों के लिए बौद्धिक, भावात्मक और संकल्पात्मक प्रक्रियाओं को अपनाने पर आग्रह है, जो संकट की स्थिति में औषधि का काम करती है।

मुख्य शब्द : कुरूक्षेत्र, सांसारिक, आध्यात्मिक, सर्वांगता, कर्मण्ये, परित्राणाय।

प्रस्तावना

न काँक्षे विजयं कृष्ण न च राज्यं सुखानि च।
किं नो राजयेन गोविन्द किं भोगेजीवितेन वा ।।

अर्थात्–मैं जीतना नहीं चाहता और राज्य के सुखों को भी नहीं चाहता। हे गोविन्द! हमें राज्य से क्या लेना देना तथा भोगों एवं जीवन से भी क्या लेना है।

श्रो भगवत्गीता महाभारत महाकाव्य के भीष्म पर्व का ही एक महत्वपूर्ण भाग है, जो भगवान श्रीकृष्ण के मुखारविन्द से कुरूक्षेत्र के युद्ध के दौरान अभिव्यक्त हुई। इसे 700 श्लोकों एवं 18 अध्यायों में विभक्त किया गया है। भगवद्गीता का शाब्दिक अर्थ– प्रभु का गीत। यह प्रभु मुख से युद्ध के मैदान में उस समय अर्जुन को दिया गया उपदे"ा है, जब अर्जुन युद्ध/क्षेत्र में भाइयों, बुजुर्गों, गुरूजनों एवं अन्य सगे–सम्बन्धियों को मुकाबले में खड़ा देखकर मोह उत्पन्न होने के कारण युद्ध करने से साफ इन्कार कर देता है।

इस प्रकार के हतोत्साहित अर्जुन को सारथी के रूप में भगवान श्रीकृष्ण समझाते हैं तथा उसकी प्रत्येक जिज्ञासा का उत्तर देते हैं। अतः 'गीता' अर्जुन एवं कृष्ण के बीच काव्यात्मक संवाद है। यह संवाद अर्जुन के सम्मुख एक नैतिक समस्या के उत्पन्न होने के कारण शुरू हुआ। यह नैतिक समस्या 'युद्ध न करने' की थी। काफी लम्बे संवाद (प्र"नोत्तर) द्वारा अन्त में भगवान श्रीकृष्ण का विराट रूप देखने के बाद अर्जुन युद्ध करने को तैयार हो जाता है। गीता में अर्जुन के तीन मार्गों का महत्व समझाया गया है। ये तीन मार्ग इस प्रकार हैं।–

1. ज्ञान प्राप्ति का मार्ग
2. कर्म करने का मार्ग
3. वि"वास का मार्ग

गीता के अनुसार ि"ाक्षा का अर्थ 'न हि ज्ञानेन सदृ"ां पवित्रमिह विद्यते ' गीता में ि"ाक्षा का ज्ञान के अर्थ में ग्रहण किया है। इसके अनुसार ि"ाक्षा जन्म–जन्मान्तर तक चलने वाली प्रक्रिया है।''

गीता में ज्ञान का उल्लेख दो रूपों में किया गया है–

1. सांसारिक
2. आध्यात्मिक

आधुनिक युग में गीता द"ार्न की उपयोगिता गीता का ज्ञान व्यक्ति को कर्म करने की प्रेरणा देता है। यह व्यक्ति केवल अर्जुन ही नहीं है, ऐसी समस्या किसी भी व्यक्ति के सामने आ सकती है, जो अर्जुन की स्थिति में हो।

वह व्यक्ति चाहे किसी भी धर्म, जाति या सम्प्रदाय से सम्बन्ध रखता हो। आज भी 'सरकार रूपी अर्जुन' के सामने दे"ा की एकता व अखण्डता बनाये रखने की समस्या खड़ी है, दे"ा में आतंकवाद फैलता जा रहा है। दे"ा में नहीं वरन् यह पूरे वि"व की एक ज्वलन्त समस्या के रूप में उभर कर आया है। इसके चलते बेकसूर और मासूम लोग आये दिन आतंकवाद का ि"ाकार हो रहे हैं। आज भी ऐसे कृष्ण की आव"यकता है जो सरकार रूपी अर्जुन को इस विकराल समस्या पर काबू पाने के लिए अपने कर्त्तव्य का बोध कराये और इसके विरूद्ध युद्ध करने के लिए प्रेरित करे। यदि सरकार भी अर्जुन की भांति यह सोचती रहेगी कि इस युद्ध में उसके प्रिय, भाई–बान्धव मारे जायेंगे तो हालात वैसी ही बनी रहेगी जो युद्ध से पूर्व अर्जुन की थी। आज आतंकवाद ही एक समस्या नहीं है। हमारे दे"ा में नैतिकता का ह्रास होने के कारण जिधर देखो उधर ही अर्कमण्यता ने घर कर रखा है। सरकारी दफ्तरों में कर्मचारी, सरकारी विद्यालयों में ि"ाक्षक कोई भी अपने कर्तव्य का पालन नहीं करता है। पुलिस विभाग में भी गुण्डागर्दी, हत्यायें, लूटपाट आदि रोकने में पुलिस भी अकर्मण्य दिखाई पड़ती है। ये सभी लोग उसी की सुनते है जिसकी ऊँची पहुँच हो। इस प्रकार सम्पूर्ण वि"व में नैतिक पतन होने के कारण इसकी छवि बिगड़ती ही जा रही है। गीता ने अर्जुन को नैतिक बल दिया जिसके कारण वह बुराई से युद्ध करने के लिए कत्तव्योंन्मुख हुआ। यहाँ कौन कृष्ण सामने आये। इस प्रकार गीता न केवल महाभारत युग में ही उपयोगिता लिए हुई थी, बल्कि यह किसी भी युग में वर्तमान एवं भविष्य सभी युगों के लिए एक मार्ग–द"ार्क का कार्य करती है और प्रत्येक व्यक्ति को अपने–अपने कर्म अर्थात कर्त्तव्यों उत्तरदायित्वों का निःस्वार्थ भाव से वहन करने की ि"ाक्षा प्रदान करती है।

गीता का 'ि"ाक्षा– द"ार्न' समझने के लिए द"ार्न"ाास्त्र के निम्न बिन्दुओं को जानना आव"यक हैः–

1. वि"व की प्रकृति क्या है?
2. मानव की प्रकृत क्या है?
3. ज्ञान का स्वरूप क्या है?
4. सत्य है या वास्तविकता क्या है?

प्रत्येक व्यवस्थित द"ार्न"ाास्त्र में अपने– अपने दृष्टिकोण के अनुसार उक्त सभी प"नों के उत्तर देने का प्रयास किया गया है। गीता काई दा"ार्निक ग्रन्थ नहीं है, न ही इस उद्दे"य से भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को कोई दा"ार्निक उपदे"ा देने का यत्न किया। अर्जुन को जो भी उपदे"ा दिये उसका महज उद्दे"य कर्त्तव्य पालन करना था। अर्जुन अनेक प्र"न पूछता चला गया, जिसका उत्तर भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन की जिज्ञासा को शान्त करने के लिए दिया। उनके उत्तरों के आधार पर ही हम उनके दा"ार्निक विचारों का संकलन कर सकते हैं तथा उपर्युक्त सभी प्र"नों का उत्तर प्राप्त कर सकते हैं।

गीता के अनुसार विश्व की प्रकृति

गीता के अन्तर्गत भगवान श्रीकृष्ण ने सृष्टि की रचना से सम्बन्धित ससार क दो प्रकार की प्रकृतियों का वर्णन किया है–

पराप्रकृति

इसके अन्तर्गत जीवात्मा को पराप्रकृति माना गया है। इसी का शरीर में निवास होता है। यह पराप्रकृत ही सम्पूर्ण वि"व का धारण करती है तथा सचेतन तथ्य है।

अपराप्रकृति

इसके अन्तर्गत पृथ्वी, जल, आका"ा, वायु तथा अग्नि इन पाँच तत्वों से मिलकर बनी है। इसे अचेतन या जड़ तत्व की की संज्ञा दी गई है। इस वि"व की रचना अपरा–प्रकृति और पराप्रकृति के संयोग के परिणामस्वरूप हुई है। जड़ तथा चेतन के मिलनोपरान्त सृष्टि निर्मित हुई।

गीता के अनुसार मानव–प्रकृति

मनुष्य परा एवं अपरा दोनों प्रकृतियों से मिलकर बना है, जिसमें आत्मा परा है, जो सचेत है और शरीर अपरा है, जो अचेतन पदार्थ है। आत्मा की वि"ोषताएँ निम्नलिखित हैं–

1. यह अविना"ाी है।
2. यह नित्य है।
3. यह अजन्मा है।
4. यह अव्यय है।
5. यह सवाँगता है।
6. यह सनातन है।
7. यह अव्यक्त है।
8. यह अचिन्त्य है।
9. यह अविकार है।
10. यह अमर है।

गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को आत्मा की महत्ता इस प्रकार बतलाई है कि मनुष्य के शरीर का

ही अन्त होता है, आत्मा का नहीं। इस सम्बन्ध में श्लोक प्रचलित है–

''वासांसि जीर्णानि यथा विहाय,नवानि गृह्णाति नरोपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानिदेही।।''

अर्थात जिस प्रकार मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्याग कर नये वस्त्रों को धारण करता है उसी प्रकार जीवात्मा पुराने शरीर को त्याग कर नये शरीर में प्रवे"ा करती है। यह आत्मा परमात्मा का ही अ"ा है। अतः इसका अन्तिम लक्ष्य परमात्मा में विलिन होना है, अर्थात मोक्ष की प्राप्ति है। निष्काम कर्म अर्थात बिना स्वार्थ की भावना से काम करने से परमात्मा या मोक्ष की प्राप्ति सम्भव है। इसलिए मनुष्य को निष्काम कर्म करना चाहिए। किसी असामाजिक उद्दे"य को लेकर किया गया कार्य ठीक नहीं।

गीता के अनुसार ज्ञान का स्वरूप

योग को ज्ञान प्राप्ति का मार्ग कहा गया है। इसमें कर्म योग एवं भक्ति योग का वि"ोष उल्लेख किया गया है। कर्म की परम सीमा ही ज्ञान है। 12 कर्म से ज्ञान प्राप्त होता है और ज्ञान पाप्त होने पर व्यक्ति और आगे कार्य करने के लिए उद्यत होता है। इस प्रकार ज्ञान एवं कर्म दोनों में अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। गीता में सात्त्विक, राजस एवं तामस तीनों प्रकार के ज्ञान का उल्लेख है। जिसमें सात्विक ज्ञान को श्रेष्ठ माना गया है।

गीता के अनुसार सत्य या वास्तविकता

गीता के अनुसार 'ब्रह्म' ही सत्य है और यही वास्तविकता है। आत्मा ब्रह्म का ही अ"ा है। आत्मा अन"वर है और शरीर का अन्त होने के प"चात् यह अपने बृहद स्वरूप से मिलने के लिए लालायित रहती है जिसे ब्रह्म या परमात्मा कहते हैं। गीता में सम्पूर्ण वेदों का सार निहित है। इसमे अर्जुन सत्य को खोजने वाले के रूप में और भगवान श्रीकृष्ण सत्य का ज्ञान देने वाले हैं। गीता के अनुसार अन्तिम वास्तविकता सर्वोच्च चेतना है, जिसे ब्रह्म कहते हैं।

गीता के दार्शनिक सिद्धान्तः–

गीता–दर्शन को दो रूपों में देखा जा सकता हैः–

1. आध्यात्मिक पक्ष
2. व्यावहारिक पक्ष

गीता का आध्यात्मिक पक्ष

गीता के आध्यात्मिक पक्ष के अन्तर्गत ब्रह्म, जीव, जगत, पुरूषोत्तम का विचार किया जा सकता है।

ब्रह्म

गीता के अनुसार ब्रह्म या ई"वर सर्वोपरि है, जो अविना"ाी, नित्य, चेतना–प्रका"ाक, शुद्ध सच्चिदानन्द, अविद्या से परे सर्वत्र व्याप्त सार्वकालिक और अनादि है।

इस सर्वोपरि सत्ता के दो रूप हैं–

(क) अव्यक्त, निराकार, निर्गुण, अनन्त, अविना"ाी स्वरूप या ब्रह्म का निर्गुण रूप है।

(ख) सगुण रूप जो अविना"ाी, अजन्मा सब प्राणियों का ई"वर होने पर भी अपनी प्रकृति के अधीन कर योग माया से प्रकट होता है।

पुरूषोत्तम

यह गीता के पुरूषोत्तम 'परम तत्व' है, जो निर्गुण एवं सगुण दोनों ही हैं। उसमें परब्रह्म की निर्विकारिता और ई"वर की क्रिया"ाीलता दोनों का समावे"ा है। यह ना"ावान शरीर व अविना"ाी जीवात्मा से श्रेष्ठ है और अपने भक्तों को ज्ञानोपदे"ा देने के लिए सदैव उद्यत रहता ह।

आत्मा

यह जीवात्मा अविना"ाी, अजन्मा, नित्य, शा"वत, अचिन्त्य, सर्वव्यापक, निर्विकार और अव्यक्त है यह परमाात्मा का ही सनातन अ"ा है। प्रकृति के तीन गुण सत, रज, तम, इस आत्मा को शरीर से बाँधते हैं।

जगत

गीता में जगत के विषय में कहा गया है कि जिस प्रकार बीज से वृक्ष उत्पन्न होता है तथा अन्त में बीज में ही विलीन हो जाता है, उसी भाँति यह जगत परब्रह्म से उत्पन्न होता है और पुनः उसी भगवान में विलीन हो जाता है। इस प्रकार इस जगत की उत्पत्ति और विलय का कारण परब्रह्म या भगवान ही है।

अपरा एवं पराप्रकृति

इसमें दो प्रकार की प्रकृतियों का उल्लेख किया गया है–अपरा प्रकृति जो आका"ा, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, मन, अहंकार और बुद्धि से युक्त है। यह अचेतन, भौतिक व जड़ है। पराप्रकृति को चेतन तत्व से समन्वित है, जगत को धारण करती है।

गीता का व्यावहारिक पक्ष

गीता के व्यावहारिक पक्ष में ज्ञान, कर्म और भक्ति का अद्भुत समन्वय बतलाया गया है। इन मार्गों द्वारा साधना करके ई"वर की प्राप्ति की जा सकती है, जिन्हें क्रम"ाः ज्ञानयोग, कर्मयोग और भक्तियोग की संज्ञा दी गई है।

ज्ञानयोग

अज्ञान का अन्त करने के लिए ज्ञान अनिवार्य है। ज्ञान दो प्रकार का है–

तार्किक ज्ञान, आध्यात्मिक ज्ञान। तार्किक ज्ञान में वस्तुओं के ब्रह्म स्वरूप की चर्चा की जाती है। आध्यात्मिक ज्ञान वस्तुओं के वास्तविक स्वरूप की चर्चा करता है। ज्ञान से कर्मों की अपवित्रता का ना"ा होता है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा कि ''जो ज्ञाता है, वह हमारे सभी भक्तों में श्रेष्ठ है।''

कर्मयोग

गीता में कर्म का अर्थ 'कर्त्तव्य' अथवा सामाजिक दायित्व से लिया गया है। योग को 'जोड़ने' या संलग्न करने' के अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है, इस प्रकार कर्म योग का अर्थ हुआ– ' सामाजिक दायित्वों में संलग्न होना। गीता में कर्मयोग की अत्यन्त सुन्दर व्याख्या निम्न श्लोक में की गई है–

''कर्मण्ये वाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफल हेतुभूर्मातेऽस्त्व कर्मणि।।''

अर्थात भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं– ''कर्म पर ही तुम्हारा अधिकार है, कर्म–फल पर नहीं । तुम कर्मफल का हेतु भी मत बनो और अकर्म में तुम्हारी आसक्ति न हो।'' दत्तचित्त रहने और किसी प्रकार के कर्मफल की इच्छा न रखने और निष्काम कर्म को अपने जीवन का आद"ार बनाने का आदे"ा देती है। निष्काम

कर्मयोग को कामना रहित होने के कारण 'अनासक्तियोग' भी कहा गया है। इसी से मोक्ष की प्राप्ति सम्भव होती है, क्योकि इसी अनासक्त कर्मयोग से व्यक्ति सांसारिक बन्धनों से मुक्त होकर ब्रह्मज्ञान या आत्मज्ञान प्राप्त करता है।

भक्तियोग

गीता के अनुसार भक्तिमार्ग को ही ई"वर प्राप्ति का सर्वश्रेष्ठ मार्ग कहा गया है। ई"वर में श्रद्धा रखकर निःस्वार्थ भाव से कर्म करके व्यक्ति मोक्ष को प्राप्त करता है। भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को ज्ञानोपदे"ा करते हुए गीता के चतुर्थ अध्याय में इस प्रकार कहा है–

''तद्विद्धि प्राणिपातेन परिप्र"नेन सेवया।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वद"िर्नः।।''

अर्थात् ''नमस्कार द्वारा, चर्चा द्वारा तथा सेवा द्वारा ज्ञान को प्राप्त कर तत्त्वदृष्ट ज्ञानी लोग तुझे उस ज्ञान का उपदे"ा देंगे। ज्ञान प्राप्ति के लिए श्रद्धा व भक्ति आव"यक है। तभी–भगवान अपने भक्त को पूर्णतया आ"वस्त करते हैं।

''कौन्तेय प्रति जानीहि, न मे भक्त प्राणिष्यति।''

हे कौन्तेय! मेरा ि"ाष्य कभी असफल नहीं होता। इस तरह गीता में भक्ति योग को श्रेयस्कर माना गया है, तभी श्रीकृष्ण अर्जुन को कहते हैं–

''सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं ब्रज।
अहमं त्वां सर्व पापेम्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।। (18/60)

अर्थात सब धर्मों को छोड़कर मेरी शरण में आ। मैं तुझे सभी पापों से मुक्त करूँगा, तुम मुझमें मन लगाओं मेरे भक्त बनो, मेरी आराधना करो एवं नमस्कार करो, क्योकि मुझे भक्त अत्यन्त प्रिय हैं, मेरे भक्त का कभी ना"ा नहीं होता।

गीता के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य

गीता के अनुसार ि"ाक्षा यह है जो प्रत्येक व्यक्ति में अन्तर्निहित परमात्मा (बह्म) की अनुभूति कराने में सहायक सिद्ध हो। आत्मानुभूति ि"ाक्षा द्वारा ही सम्भव है। जिस व्यक्ति के ज्ञाननेत्र खुल जाते है, वे ही इस अन्तरात्मा को पहचान सकते हैं, अज्ञानी मोह के बन्धन में पड़ा प्राणी अन्तरात्मा का द"ार्न करने में समर्थ नहीं हो सकता–

''उत्क्रामन्त स्थित ज्ञापि, मुन्जानं वा गुणान्वितम्।
विमूढ़ा नानुप"यन्ति प"यन्ति ज्ञानचक्षुषः।।''

इस प्रकार ि"ाक्षा के उद्दे"य को निम्नलिखित रूपों में समझा जा सकता है–

निष्काम कर्म की प्रेरणा का उद्देश्य

गीता द"ार्न के अनुसार ि"ाक्षा का उद्दे"य बालकों को कर्म करने की प्रेरणा देना है। कर्त्तव्य के द्वारा ही व्यक्ति लौकिक एवं पारलौकिक, भौतिक एवं अभौतिक सुखों को प्राप्त कर सकता है। इस सम्बन्ध में एक श्लोक प्रसिद्ध है–

''कर्मण्ये वाधिकारस्ते .....संगोऽस्त्वकर्मणि।।

धार्मिक जीवन के विकास का उद्देश्य

इसके अनुसार ि"ाक्षा का उद्दे"य बालक में धार्मिकता की भावना का विकास करना होना चाहिए, ताकि वह धर्म व अधर्म में अन्तर कर सके। इस सम्बन्ध में एक श्लोक प्रसिद्ध है–

''यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।'' (4/7)

अर्थात हे अर्जुन! जब–जब धर्म की हानि होती है और अधर्म का प्रादुर्भाव होता है, तब–तब मैं जन्म लेता हूँ और अपने भक्तों का उद्धार करता हूँ।

आत्मा की पुकार के अनुसार करने की प्रेरणा देना गीता की शिक्षा का मुख्य उद्देश्य

सामाजिक उत्तरदायित्वों को निभाने के साथ–साथ मानव मात्र में विराजमान अन्तरात्मा की पुकार के अनुसार कर्म करने, अन्तरात्मा का अनुसरण करने एवं तदनुकूल अपने जीवन को ढालने की प्रेरणा देना है। किसी भी व्यवहार की कसौटी समाज द्वारा मान्य व्यवहार नहीं अपितु आत्मा की पुकार के अनुरूप व्यवहार करना है।

मानव जीवन के सार का अर्थ समझना

भगवान श्रीकृष्ण को उपदे"ा करते हुए कहते हैं–

''परित्राणाय साधूनां विना"ाायचदुष्कृताम्।
धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।।

अर्थात– साधुओं (सज्जनों) की रक्षा के लिए, दुष्टों का विना"ा करने के लिए तथा धर्म की स्थापना हेतु मैं हर युग में में अवतरित होता हूँ।

चिन्तन भाक्ति विकसित करने का उद्देश्य

इसके अनुसार सभी मनुष्य सत्य, असत्य तथा उचित एवं अनुचित की पहचान कर सके।

आत्मानुभूति का उद्देश्य

व्यक्ति इन्द्रियों मन एवं बुद्धि से सूक्ष्म एवं बलवान,"ाा"वत तत्त्व आत्मा है और जब तक व्यक्ति अपनी इन्द्रियों, मन एवं बुद्धि को अपने व"ा में करके इस तत्त्व की अनुभूति नहीं कर पाता, तब तक ि"ाक्षा का उद्दे"य पूर्ण नहीं होता। अतः आत्मा को जानने के प"चात ही मनुष्य परमात्मा द"ार्न की अगली सीढ़ी पर पहुँचता है।

इन्द्रियों को वश में करने का उद्देश्य

काम का निवास स्थान इन्द्रियाँ हैं। अतः काम के विना"ा के लिए इन्द्रियों को व"ा में करना परमाव"यक है।

नैतिक चरित्र

बालक का चरित्र नैतिक दृष्टि से उन्नत बनाना है। जिसके कारण बालक में मानव कल्याण एवं आद"ावादी मूल्यों को ग्रहण करने की क्षमता उत्पन्न होती है।

तार्किक भाक्ति का विकास

बालक का इस तरह चारित्रिक गुण विकसित किया जाये जिससे सत्य–असत्य, सही–गलत, अच्छा–बुरा आदि की पहचान कर सके।

मोक्ष प्राप्ति का उद्देश्य

गीता के अनुसार ि"ाक्षा का उद्दे"य मोक्ष प्राप्ति है। 'सा विद्या या विमुक्तये' अर्थात् वह है जो मुक्ति दिलाये जन्म मरण के बन्धन से मुक्ति ही मोक्ष है और मोक्ष–प्राप्ति निष्काम कर्म द्वारा सम्भव हो सकती है। इसका मुख्य उद्दे"य काम, क्रोध, मद, लोभ मोह, माया आदि आसक्तियों से दूर हटकर इन्द्रिय निग्रह द्वारा निष्काम कर्म सम्पन्न कर आवागमन से छुटकारा प्राप्त करना गीता के अनुसार ि"ाक्षा का उद्दे"य है।

गीता दर्शन के अनुसार पाठ्यक्रम

गीता द"र्न के अनुसार पाठ्क्रम को निम्नलिखित रूपों में विभक्त किया जा सकता है–

परा विद्या

आत्मा क्या है? मृत्यु के प"चात आत्मा कहाँ चली जाती है? जीवन क्या है? जगत क्या है? जीव क्या है? सुख–दुःख क्यों होते हैं? इस सभी का वि"ाद विवेचन परा विद्या प्रस्तुत करती है। अध्यात्म शास्त्र, द"र्न"ाास्त्र इसके अन्तर्गत आते हैं।

अपरा विद्या

यह भैतिक ज्ञान की विद्या है, विज्ञान सामाजिक–विज्ञान, ज्योतिष, ललित कला, नृत्य कला, काव्य, गणित आदि विषयों को इसके पाठ्यक्रम में स्थान दिया गया है।

व्यक्तिगत भिन्नता के आधार पर परापाठ्यक्रम

गीता द"र्न के अनुसार व्यक्ति की बुद्धि, रूचि, स्वभाव एवं कर्म के अनुसार उसकी आव"यकताओं को पूर्ण करने वाला पाठ्यक्रम बनाया जाना चाहिए, जिससे उसकी सहज स्वाभाविक क्षमताओं का विकास हो सके।

सिद्धान्त एवं व्यवहार में समन्वय स्थापित करने वाला पाठ्यक्रम

इसके द्वारा प्रतिपादित पाठ्क्रम एकांगी नहीं है। वह पाठ्यक्रम सिद्धान्तों को तभी श्रेष्ठ मानता है, जब वे व्यवहार की पृष्ठभूमि पर आधारित हों। अतः समस्त क्रियाएं मानव को श्रेयस् की ओर ले जाने वाली होने पर भी श्रेयस् की उपेक्षा नहीं करती।

गीता दर्शन के अनुसार शिक्षण विधियां

गीता में ज्ञानयोग, कर्मयोग एव भक्तियोग का अपूर्व समन्वय है, इन तीनों के लिए अलग–अलग f"ाक्षण–विधियां बतलाई गई हैं। वास्तव में f"ाक्षण विधियां छात्रों की जन्मजात प्रवृत्तियों, योग्यता एवं रूचि पर आधारित होनी चाहिए। इस दृष्टि से गीता में निम्नलिखित f"ाक्षण–विधियों का प्रयोग किया गया है। ज्ञान योग या ज्ञानात्मक प्रकृति वाले छात्रों के लिए गीता में दो विधियों– प्र"नोत्तर एवं तर्क विधि का प्रयोग हुआ है।

प्रश्नोत्तर विधि

गीता में इस विधि का प्रयोग कृष्ण–अर्जुन संवाद सर्वत्र मिलता है। प्रारम्भ में युद्ध क्षेत्र में परिवारजनों के सम्मुख होता हुआ अर्जुन जब श्रीकृष्ण से पूछता है–

''येषामर्थे कांक्षितं नो राज्यं, भोगाः सुखानि च।
ते इमेंडवस्थिता युद्धे प्राणांस्त्यक्त्वा धनानि च।।''

अर्थात् हम जिसके लिए राज्य, भोग और सुख की इच्छा कर रहे हैं, वे ही सब धन और जीवन की आ"ाा छोड़कर युद्ध में खड़े हैं। अतः मैं राज्य और सुखों को नहीं चाहता, इस पर श्रीकृष्ण उसे समझाते हैं।

तर्क विधि

गीता में अर्जुन व श्रीकृष्ण के बीच निरन्तर तर्क चलता रहता है तथा कृष्ण तर्क द्वारा अपने विचारों से अर्जुन को सुतुष्ट करने का प्रयास करते हैं। इस प्रकार गीता में प्र"नोत्तर एवं तर्क वितर्क विधि द्वारा कृष्ण अर्जुन संवाद चलता रहता है। शंका समाधान में जिज्ञासु (f"ाक्षा) किसी भी गूढ़ विषय पर उत्पन्न हुए अपने मन के विचारों को शंका के रूप में विषयज्ञाता (गुरू) के समक्ष प्रस्तुत करता है और उसकी शंका का समाधान f"ाक्षक या गुरू करता है।

प्रत्यक्ष विधि

इस विधि का प्रयोग कर्म–योग अथवा क्रियात्मक प्रकृति वाले छात्रों के लिए किया जाता है।

श्रवण, मनन व निदिध्यासन विधिया

ये विधियाँ भक्तियोग अथवा भावना प्रधान छात्रों के लिए आव"यक होती है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण कहते है–

''मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्करू।
मामेवैष्यासि युक्तत्वैवमात्मानं मत्परायणः।।'' (9/34)

अर्थात– केवल मुझ सच्चिदानन्द वासुदेव परमात्मा में ही अनन्य प्रेम से ही नित्य, निरन्तर अचल मनवाला हो और मुझ परमे"वर को ही श्रद्धा प्रेम सहित निष्काम भाव से नाम गुण और प्रभाव के श्रवण, कीर्तन, संगीत, स्मरण, ध्यान, मनन एवं पाठन द्वारा निरन्तर भजने वाला हो इस प्रकार ज्ञान प्राप्ति के लिए गुरू के प्रति समर्पण भाव आव"यक है।

गीता के अनुसार गुरू–शिष्य सम्बन्ध

इसके अनुसार विद्यार्थी संयमी, रागद्वेष मक्त, ब्रह्मचारी, सदाचारी होना चाहिए। विद्या प्राप्त करना योग कर्म है। अतः f"ाक्षार्थी को योगी होना चाहिए। अध्ययन तपस्या के समान है। छात्र को इस तप कर्म में लीन रहना चाहिए, उसे अपने धर्म में कभी त्रुटि नहीं करनी चाहिए। अर्थात स्वाध्याय में कभी प्रमाद नहीं करना चाहिए।

f"ाक्षक के मन में अपने छात्र के प्रति अनन्य प्रेम होना चाहिए। छात्र के हित की कामना उसकी प्रथम इच्छा होनी चाहिए। निर्भयता, बुद्धि"ालता, अहिंसा, सन्तोष, क्षमा, सत्य, आत्म नियंत्रण आदि गुणों से युक्त व्यक्तित्व वाला आचार्य छात्र के कल्याण की इच्छा रखने वाला होना चाहिए। इस विषय में गीता में ठीक ही कहा गया है– ''अभ्यासयोगेन ततो मामिच्छाप्तुं धनंजयः।'' अर्थात् हे अर्जुन! अभ्यास रूप योग के द्वारा मेरे को प्राप्त होने के लिए इच्छा कर भाव यह है कि f"ाष्य अभ्यास के द्वारा गुरू तत्व में स्वयं को विलीन कर दे।

निष्कर्ष

गीता में एक ऐसे विद्यार्थी को द"ार्या गया है जो सीखने का इच्छुक है। शंका उत्पन्न होने पर प्र"न पूछ कर उसका समाधान चाहता है, अपने गुरू के प्रति श्रद्धा, वि"वास एवं आदर की भावना रखता है और ध्यानपूर्वक अपने गुरू के प्रवचन को सुनता है और उनके बताये मार्ग का अनुसरण करता है। गरू ने अपने छात्र को पिता तुल्य स्नेह प्रदान करता है, मित्र की भांति उसकी प्रत्येक समस्या को ध्यानपूर्वक सुनता है और मार्ग–द"ार्क के रूप में आव"यक पराम"ार्ा देता है तथा सदैव उसके कल्याण की सोचता है।

अंत में हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि गीता में जो ज्ञान दिया गया है, वह अर्जुन की तरह किंकर्त्तव्य विमूढ़ होने वाले व्यक्ति के लिए उपयोगी है। इसका कर्म योग का सन्दे"ा संसार के लिए एक महान संदे"ा है, जिससे आज का मानव विमुख हो गया है। वह अपने

स्वार्थ के लिए कर्म करता है, जो वास्तव में कर्म नहीं है, क्योकि इस प्रकार के कर्म में समाज कल्याण की भावना का अभाव है। पूरी गीता, ज्ञान का एक ग्रंथ है, जिसमें नर और नारायण के मध्य वार्तालाप द्वारा सत्य को प्रतिपादित किया गया है। कृष्ण यहाँ वि"व गुरू के रूप में हैं, जो अर्जुन के माध्यम से पूरे वि"व को वि"व की वास्तविकता से अवगत करा रहे हैं। आज के प्रजातान्त्रिक युग में द"ार्ये गये मार्ग को अपनाना बहुत आव"यक है, क्योकि आज व्यक्ति अपने सामाजिक उत्तरदायित्वों से विमुख हो गया है।

इस प्रकार हम कह सकते है कि गीता में 'सत्य, ि"ावं, सुन्दरम्' जैसे आध्यात्मिक मूल्यों के लिए बौद्धिक, भावात्मक और संकल्पात्मक पक्रियाओं को अपनाने पर आग्रह है, जो चारित्रिक संकट की स्थिति में औषधि का काम करते हैं। साथ ही गीता में प्रतिपादित नैतिकता और मानवतावादी मूल्यों की आज की 21 वीं सदी की ि"ाक्षा को अतीव आव"यकता है, जिसे भौतिकवादी प्रगति के साथ–साथ पारस्परिक प्रेम सम्बंधी मूल्यों को भी स्वीकार करे।

संन्दर्भ ग्रंथ सूची

अग्रवाल डा. एस.के.: ि"ाक्षा के तात्त्विक सिद्धान्त, राजे"ा पब्लि"िंग हाउस, शंकर सदन 729 पी.एल. शर्मा रोड, मेरठ (उ.प्र.)।

बलियाँ डा. जे.एस.: ि"ाक्षा के सिद्धान्त तथा विधियां, वाल पब्लि"ार्स एन. एन. 11 गोपाल नगर जालंधर शहर पंजाब।

सिंह डा. रामपाल: ि"ाक्षा एवं भारतीय समाज, विनोद पुस्तक मंन्दिर आगरा।

शुक्ला डा. डी. सी.: उदीयमान भारतीय समाज में ि"ाक्षा, धनपतराय पब्लि"िंग कम्पनी प्रा. लिमिटेड नई दिल्ली, 110003।

शर्मा आर.ए. एवं चतुर्वेदी ि"ाखा: अध्यापक प्रा"िक्षण तकनीकी विनय रखेजा व आर. लाल बुक डिपो, निकट गवर्नमेण्ट इण्टर कालेज, मेरठ।

गौड़ डा. के.सी. एवं डा. सुनीता : संस्कृत ि"ाक्षण, अरिहन्त ि"ाक्षा प्रका"ान, चौड़ा रास्ता जयपुर, राजस्थान।

गौड़ डा. के.सी. एवं डा. सुनीता : हिन्दी ि"ाक्षण, अरिहन्त ि"ाक्षा प्रका"ान, चौड़ा रास्ता जयपुर, राजस्थान।